251
1062
H (P)
Microfilm

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY

भारत सरकार

Government of India

नई दिल्ली

New Delhi

1161/1024

आह्वानांक Call No.

अवाप्ति सं० Acc. No. 1062

वन्देमातरम्

टोडी बच्चा व राष्ट्रीय मलहार

उर्मिला संदेश

और

इंकलाब की लहर

तीसरा भाग

संग्रह करता

गोविन्दराम गुप्ता. रहबर

प्रकाशक—

लाला सांवलदास, बुकसेलर

दरीबा कलां देहली

मारतण्ड प्रेस देहली

प्रथमबार १०००] [मूल्य -)

Todi Bachcha Rashtriya Malhar
Urmila Sandesh aur
Inqilab Ki Lahr
Part 3.
in Hindi
Govt. of U.P.
1062
2 copies

IMPERIAL ... BOOKS
RECEIVED.
10 DEC. 1930
DEP...

891.431
G07747 T

ओ३म

दोढी बच्चा व राष्ट्रीय मलहार

और

इन्कलाब की लहर

वन्देमातरम

सुजलाम् सुफलाम् मलयज-शीतलाम्
शस्य-श्यामलां मातरम् ॥ वन्दे० ॥
शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकित यामनीम्
फुल्ल-कुसुमित द्रुमदल शोभिनीम्
सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्
सुखदाम् वरदाम् मातरम् ॥ वन्दे० ॥
त्रिंशं कोटि कलकल निनाद कराले
द्वित्रिंशं कोटि भुजैर्धृत खर कर वाले
के बोले मा तुमि अबले।
बहुबल धारिणीम् नमामि तारिणीम्
रिपुदल-वारिणीम् मातरम् ॥ वन्दे० ॥
श्यामलाम् सरलाम् सुस्मिताम् भूषिताम्
धरणीम् भरणीम् मातरम् ॥ वन्देमा तरं ॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 1062
Date 28.12.71

गजल नं० १

यहाँ पाओगे महशर में ज़बाँ मेरी बयाँ मेरा ।
मैं बन्दा हिन्द वालों का यह कुल हिन्दोस्ताँ मेरा ॥
मेरा है खून हिन्दी जात हिन्दी ठेठ हिन्दी हूं ।
यही मज़हब यही फिरका यही है खानदाँ मेरा ॥
कदम चूमूं मादरे हिन्द के बैठते उठते ।
मेरी ऐसी कहाँ किस्मत नसीबा ऐसा कहाँ मेरा ॥
तेरी चाहत में हिन्दुस्ताँ अगर सर जाय जाँ जाये ।
तो मैं समझूं कि है मरना हयात जाविदाँ मेरा ॥

गजल नं० २

अज़ल से हमको प्यारा हिन्दोस्ताँ हमारा ।
हम बुलबुलें हैं इसकी यह गुलस्ताँ हमारा ॥
सौ बार हम कहेंगे लाखों में हम कहेंगे ।
हिन्दोस्ताँ हमारा हिन्दोस्ताँ हमारा ॥
ऐ साहबान इंगिलिश फरक्का बना हो लेकिन ।
हरगिज़ नहीं तुम्हारा हिन्दोस्ताँ हमारा ॥
उससे तुम्हें है उलफत हमसे हमें मुहब्बत ।
इंगलैंड है तुम्हारा हिन्दोस्ताँ हमारा ॥
मंगल बने यहाँ पर उतरे कहीं सनीचर ।
नुसरत का हो सितारा हिन्दोस्ताँ हमारा ॥

गजल नं० ३

खुशी के दौर दौरे में हैं [illegible] जो महल पहले ॥
[illegible] आ गये हैं वो ही, [illegible] [illegible] पहले ॥
मुहब्बत से [illegible] [illegible] [illegible] पहले ॥

पलेगा हिन्द पीछे और मरेगा अंडमन पहले ॥
अभी महाराज का क्या जिक्र यह तो पहला मंजल है।
हजारों मंजलें करनी हैं ते हमको कठिन पहले ॥
मनुव्वर अंजमन होती है महफिल गरम होती है।
मगर कब जबकि खुद जलती है समय अंजमन पहले ॥
हमारा हौसला यूरुप में भी ले जायगा मसकन ।
तिलक जैसे मुहब्बाने वतन हो इण्डियन पहिले ॥
म राहत को करें पर्वा न हक दाखल के तालिब हो ।
करें सब कौम पर कुरबान तन मन और धन पहिले ॥
तिलक महाराज के जैसे जिन्हों ने यह दिखाया है ।
कि शुभ कामों में होते हैं हमेशा ब्राह्मण पहिले ॥
हमें दुख भोगना लेकिन हमारा नसल सुख पाये।
यह दिल में ठान ले अपने यहां के मर्द जन पहिले ॥
मुसीबत और कयामत और कड़ा जंजीर लिक्खा हैं।
यहां तैयार बैठे हैं गरीबाने वतन पहिले ।

गजल नं० ५

टोडी बच्चा हाय हाय टोडी बच्चा हाय हाय ।
टोडी बच्चा यह कहलाना, जिसका खाय उसे गुर्राता ॥
फूले कुकड़े खाय २ टो०
खा २ माल बने अलमस्ता खुदा बनावे अपना रस्ता ॥
मूछों पर बल लाय २ ॥ टो०
कुल जिगर हिन्द की माटी का, फिर क्या हक उसको डाढ़ी का।
डंडे मारे ठाय २ टो०
अभी वक्त है समझो भाई, धम डा, आगे में करो भलाई ॥

काल दबावे आय आय ॥ टे०

गजल नं० ६

नहीं पीनी नहीं पीनी शराब जालिम नहीं पीनी।
वेद कुरान इंजील पुकारें, है ये बड़ी खराब जालिम नहीं पीनी
कोई धर्म इसे भला कहना, बुरा कहें अहबाब, जालिम नहीं०
पी बेहोश पड़े नाली में, कुत्ते करें पेशाब, जालिम नहीं पीनी
रण्डी के घर जाय शराबी, औंधा पड़ा शराब, जालिम नहीं०
कुत्ते मूंह चाटें गलियों में, मक्खी का बने रबाब, जालिम नहीं
खून बिगड़ जाय टपकन लागे, खाके पेचो ताब, जालिम नहीं०
जब कूड़ों पे गिरे शराबी, थूका मिले खिजाब, जालिम नहीं०
पेस डी० भूल इसे मत पीना, चाहे मुफ्ती मिले जनाब॥ जालिम०

टिड्डी और टोडे नं० ७

किये हैं ताख्त और ताराज सब्जा जार टिड्डी ने॥
कहां के लाला ओ गुल खा लिये हैं खार टिड्डी ने
उजाड़ा है इसी खूंखार ने खेतों के रंगों को॥
दरख्तों को फलों को सब्जियों को और बागों को
किसानों पर मुसिबत है जमीं दारों पे आफत है
गजब है कहर है कैसा सितम है क्या कयामत है॥
इधर बुलबुल है गम नाख उधर है बागबां गिरयां
गरज इसकी सितम केशी से है सारा जहां गिरयां
मगर है और भी इक जानवर इस दहर फ़ानी में
जो टिड्डी से कहीं हुशियार है एज़ार सानी में
हवा में उड़ नहीं सकता ज़िमीं पर ही वह आता है
लहु हिंदुस्तान के बसने वालों का पीता है

यह उसका फर्ज कुरबानि के फल बरबाद करदेना
यह उसका काम गैरों के दिलों में जहर भर देना
यह खाता है वतन के प्रेम का गुंथा कला डाडा
इसे अपनी जुबां में कहने वाले कहते हैं टोडी

गजल नं० ८

एक गोरे ने जो देखा राह में जाते हुये।
गारहे है लोग मिलकर गीत बन्देमातरम्॥
वह यह समझा कह रहे हैं मिलके सब यह एक दम।
गोरों को मारो व बांधो करदो एक २ का कलम
भक्त ने उसको जो देखा खाफ में आया हुआ।
बोलकर उससे कहा कि तुमको समझाते हैं हम॥
गीत कैसा गारहे हैं मिलके ऐ हजरत यह सब।
अपने मरने के लिये तय्यार हैं सारे बहम॥
मारने और बांधने का ख्याल तक इनको नहीं।
फिर के उफ कहने का भी इनको नहीं बिलकुल हुकम॥
इस किसम का हुक्म इनको महात्मा गांधी का है।
जुल्म वालो के घड़े को पाप से भरने दो तुम॥
इनकी तरफ से साफ यूरुप तक तुम्हारा रास्ता।
पर तकब्बुर ने तुम्हारे उसको कर रक्खा है गुम॥
फूटने वाला घड़ा अब पाप का लबरेज है।
"भक्त" कहता है यह आखिर बार समझाते हैं हम॥

बतर्ज तूम्बा नं० ६

इज्जत रहदी नी, मरन बिना कुछ बनदा नी करन बिना।
मौजवानो होतय्यार, इनकलाबी नार मार।

गांधी बाबा कैद होगया, तुहाडी बारी है हुन आई। इज्जत०
हिक्कां पिछे हिक्कां ढादेवो भांवें शुरू करन हजारां। इज्जत०
जालमांनू पिरस पादेवो, भाइयो हंस हंस फाँसी चढके। इज्जत०
कौमी परवानयाने दखो निरती कफन बधे। इज्जत रहदी नां
जग विच धुमाँ पादेवो, हुन असाँ गुलाम नहीं रहना। इज्जत०
भाइयो हुन हिम्मत करो, जे देश अजाद कराना। इज्जत०

रसिया नं० १०

प्रीतम चलूं तुम्हारे संग, जंग में पकडूंगी तलवार।
गाढ़े के सब वस्त्र बनाओ, सारी पब्लिक को पहनाओ॥
और मैं करूं सूत तय्यार॥ जंग में०॥
ऊंच नीच सब को बतलाओ, गांधी का पैगाम सुनाओ।
मैं भी करू नमक तय्यार॥ जंग में०॥
जेल तोप से नहीं डरूंगी, बिना काल के नहीं मरूंगी।
गोली खाने को तय्यार॥ जंग में०॥
भारत को आजाद करूंगी दुशमन को बरबाद करूंगी।
कुछ मत सोच करो भरतार॥ जंग में०॥
असहयोग की फौज सजाओ कांग्रेस की तोप लगाओ।
दुशमन भगे समन्दर पार॥ जंग में०॥
गांधी जी बन रहे कलन्दर, शरोपंज में पड़ गये बन्दर।
देखो कहा करे करतार॥ जंग में०॥
अब गांधी ने कदम बढ़ाया, गवर्नमेंट का दिल दहलाया।
देवी हो रहीं तयार॥ जंग में०॥
आजादी की छिड़ी जंग अब बनो सरोजनी सत्यवती सब।
बहना हो जाओ हुशियार, जंग में०॥

यह रसिया गागा के सुनावे, जोश जनानों को भी आवे।
शर्माजी तय्यार ॥ जंग में० ॥

गजल ११ (वतनमें चलादो चर्खा)

श्रीमती उर्मिला बहिन ने, जगाया मेरठ के नार नर को।
चले महात्मा नमक चुराने, बजा अहिंसा के शस्त्रों को ॥
लगा जमाना नमक बनाने, हुकम था उनका हरेक बशर को।
हुआ जो मेरठ में काम जारी थी उर्मिलाजी जहां पे नारी ॥
बना जनानी सभा न्यारी, दिखाया अपने इल्म हुनर को।
हुएथे लेक्चर यहां उन केप हम, था टोडीबच्चों का नाक में दम
लगी जिगर में थी आग. दायम नमक होडालाज्यू चश्मे न्यारमें
था देश भक्ति का उनको सौदा, स्वतन्त्रता का लगानी पौदा ॥
सुनाती हरेक को यह मसोदा, कि खूनदो इस शितरकी जड़ को
थी सिंह जैसी दहाड़ उनकी घडी हकूमत पै बाढ़ उनका ॥
ना सहसके जब दहाड़ उनकी, तो आ पकड़ा जभी कमरको।
जहांपे मुलजिम बनादो हाकिम, वहां जुल्फी को रहसके नदारम
किया मुकदमों को जल्द कायम. बसाया लेजाके जेल घर को।
हुई हकूमत की गुप जो सिट्टी, कानून की है पलाद मिट्टी ॥
बस आखरी है यह रोया पिट्टी, है खोदना अपनी ही कबर का।
है आखरी हद सितम अलम की, जो तुमने अब भी इसे न कमकी
है एम. डी. की बस अबयेथमकी, कि जल्द करदो खतम शररको।

मल्हार रंगत निहालदे नँ १२

अरी बीबी छोड़ो ना महलों का वास
मरदों को देदो चूड़िया ॥

घूंघट तो काढ़ें बहना बालमां,
अरी बाबी तुम चलो सरे बाजार ॥ मरदों० ॥
रोटी बनावें री बहना बालमां।
अरी बीबी हम तुम नामक बनाय ॥ मरदों० ॥
वस्त्र विदेशी पै बहना चल डटो।
अरी बहना कौड़ी का बिकने दो नाय ॥ मरदों
धरना तो दे दो री शराब पे।
अरी बहना कौड़ी की बिकनेपाय ॥ मरदों ॥
एक डर मानों करतार का।
अरी बीबी दूजे से डरिये नाय ॥ मरदों० ॥
लाठी घो गोली से बहना मत डरो।
अरी बीबी झूलो जा जेल मंझार ॥ मरदों० ॥

मल्हार नई रंगत नँ १३

कामी नारा है वन्दे मातरम।
मिलके लगाओ एक साथ ॥ कौमी० ॥ टेक
झंडा उठालो सखियों हाथ में।
दिल मिल चालो एक साथ ॥
दुशमन कौमी सुन मन कांप जा।
दिल मिल बोलै एक साथ ॥ कौमी० ॥
मरदों ने छोड़ा बहना मरदमी।
अब जस लेना थारे हाथ ॥
कपड़ा विदेशी बिकना बन्द करो।
धरना लगाओ एकहो साथ ॥ कौमी० ॥

मदरा की बिकरी बहना रोक दो।
पेकटिंग को चलो एक साथ॥
मरदों ने पहनी बहना चूड़ियां।
घर में बिठाओ दिन रात॥ कौमी० ॥
लाठी व गोली चल कर खाईये।
मुखड़े को फेरो ही नाथ॥
हंस हंस पहनों बहना हथकड़ी।
जेल चलो एक साथ॥ कौमी० ॥

मल्हार नई रंगत नं० १४

बाबा गांधी ने झूला डगरियां, झूला हिन्दुस्तान॥ बाबा० ॥
प्रेम अहिंसा गाड़ा बल्लियाँ, सत्याग्रह की डोर।
साबिल घर्तन डाली पाटड़ा झोटा दीया है लगाय॥ बाबा०॥
झूला पड़ा है अलियां बाग में, झूले मातों ही जात।
रिमझिम गोली बरसन डायरी, खूनोंकी छूटेथी फुवार॥ बाबा०॥
झोटा दिया है सिंध गुजरात ने बम्बई पींग बढ़ाय।
छुड़ मिल धावा बाला नून पे, धरसाना दिया है गुंजाय॥ बा०॥
पींग बढ़ाई फिर मदरास ने पहुंची है ठेठ बंगाल।
तड़ तड़ लाठी बरसे पुलिस की, हंटरकी अजब बहार॥ बा०॥
झूलन लगा देश पंजाब का खुलगये जेलों के द्वार।
कैसे उमाहा लगी सुसराल का, देश भगत चालेजाय॥ बाबा०॥
भारत पे छाई खूनी बादरी, बरसैं हैं दुख के पहाड़।
मरदों झुलाई बहना चोकड़ा, अब तुम को है अखतयार॥ बाबा॥

रसिया नं० १५

ग्यारहे शर्तं महात्मा गांधी की, तू सुनले कान लगाय
सुनले कान लगाय फिरंगिया, सुनले कान लगाय
१ वस्तु नसाली मत बिकवाओ, २ सिक्केका मत मोल घटाओ।
३ धरती का निस्फ लगान, ४ फौजका खर्चा देओ घटाय॥ग्या०॥
५ जो नौकर भारी तनख्वाके, उनकी थोड़ा करो घटा के।
योरोपियन हिन्दुस्तानी सबको, एकसा समझा जाय ॥ ग्या०॥
६ वस्तु स्वदेशी से चुंगी ध्यावो महसूल माल परदेशी पर लावो।
म्हारे साहूकारों के लिन्धमें दो ७ जहाज चलवाये ॥ ग्या०॥
पालनहियर लीडर म्हारे धड़े जेल में बन्द बिचारे ॥
८ राजद्रोही षड्यन्त्र के कैदी देवो छुड़ाय ॥ ग्यारेह शर्तं ॥
९ एकसौ चबालीस दफा आलफ ह, मारे झगड़े देवो मिटाके॥
कानूनी पुस्तक से बिलकुल. देना इसे मिटाय॥ ग्यारेह० ॥
१० सन अट्ठारह का कानून हटाकर, जलावतन सबलेवो बुलाकर
खुफया पुलिसका सकल महकमा, एक दम देवो हटाय॥
११ लाइसन्स हटावो हथियारोंका बन्दुका और तलवारों का।
अपनी आत्म रक्षा कारन, हमभी सकें बचाय ॥ ग्या० ॥
अंगरेजों अब कान लगावो पूरी ग्यारह शर्त करावो।
माल एस० डी० प्यारे का ये वक्त हाथ से जाय॥ ग्यारह०॥

झंडा (बतर्ज चाला) नं० १६

झंडा खुश रंग बनाया, भारत में ऊंचा ठाया ॥
भगवान तिलक ने इस झंडेको, लंदन जा लहराया ॥ झंडा ॥
महात्मा गांधी ने झंडे को घर घर पर लहराया ॥ झंडा ॥
लाला जीने इस झंडे को, स्वर्ग में जा लहराया ॥ झंडा ॥

जितेन्द्रनाथ ने इस झंडे को, जिगरी खून चढ़ाया ॥ झंडा ॥
भगत दत्त ने इस झंडे पर, गहरा रंग चढ़ाया ॥ झंडा ॥
सत्यव्रता ने इस झंडे को जेल में जा लहराया ॥ झंडा ॥
हिन्दी भाइयों ने झंडे को, जुड़ मिल ऊंचा ठाया ॥ झंडा ॥
कौमी जीवन यह झंडा है, दास, पन्त, डी, गाया ॥ झंडा ॥

चोला नं० १७

मेरा रंग दे तिरंगा चोला, जो चमके रंग अमोला ॥ मेरा० ॥
जो रंग रंगिया शिवाजी ने, माँ का बन्धन खोला ॥ मेरा० ॥
वही रंग रंगिया लाला जी ने, स्वर्ग का फाटक खोला ॥ मेरा० ॥
जैसा रंग प्रताप सिंह ने, हल्दी घाट में घोला ॥ मेरा० ॥
उसी रंग में तिलक ध्वज ने, था स्वराज टटोला ॥ मेरा० ॥
अजीत सिंह हरदयाल सिंह ने गहरा दिया झकोला ॥ मेरा० ॥
जो रंग रंगिया भगत दत्त ने, फेंका बम का गोला ॥ मेरा० ॥
वही रंग जितेन्द्र नाथ ने, जेल के अन्दर घोला ॥ मेरा० ॥
रंग निराला गांधी जी का, जल में नमक टटोला ॥ मेरा० ॥
गांधी जी के इसी रंग को, सकल देश ने घोला ॥ मेरा० ॥
जो रंग रंगिया सत्यवर्ता ने, अपना जीवन तोला ॥ मेरा० ॥
मिस कोहला और पार्वती ने, इसी रंग को घोला ॥ मेरा० ॥
आत्म देवा सूरी जी ने, जाय बयाने घोला ॥ मेरा० ॥
इसी रंग में सत्याग्रहियों ने, धरजाने पर धावा बोला ॥ मेरा ॥

वन्देमातरम् १८

कैद में जाता हूं ये लो, मेरा वन्देमातरम।
याद में मेरी हमेशाँ, जपना वन्दे मातरम ॥
मैं मराजे हुब्बे वतनी, कैद से क्या हो सफा।

यानी लेंगे तेगे दुर्रां, या हो बन्दे मातरम ॥
अब मरीजे काम बेशक, हो चुका है ला इलाज।
काम दे अकसीर का, ये नुस्खा बन्दे मातरम ॥
काट लेना सिर ये कातिल, गर तेरी मरजी यही।
मुह मे जब तक है जुबां, निकलेगा बन्दे मातरम ॥
जब मरीजे कौम का, निकले जनाजा राह से ॥
राह गीरों तुम लगाना, नारा बन्दे मातरम ॥
खाक से मेरी उगेगा, जो शजर भी बादे मर्ग।
हर पर्ग पर उसके लिखा, होवेगा बन्दे मातरम ॥

गजल नं० १६

सिडीसन केसके अब जो वतन दरबार होते हैं।
जला वतनी वो फांसी को भी हम तय्यार होते हैं ॥
मरेंगे जेलमे सड़कर न बाज आयेंगे खिदमत से।
मोहब्बाने वतन के खूब ये इकरार होते हैं ॥
अगर वे हिन्द की खातिर, सपूतो जान भी जावे।
बहादुर इस मुसीबत से भी. कब बेजार होते हैं ॥
मिलादो हिन्द की गिलमें गिल अपनी आ [illegible] कर।
वतन पर जान दो शर्मा लो फिद [illegible] दार होते हैं।

रसिया नं० २०

अरी बीबी लूटा है भारत देश। फिरंगिया डाकू आन के
पहले तो लूटी कारी गरी।
अरी बीबी लूटा है सकल व्यापार ॥ फि०
मर्द निहत्थे बहना करदिये।
अरी बीबी ले [illegible] है सब हथियार ॥ फि०

१७४ प्यारा फुलझड़ी ।

अरी बीबी जो चाहे जहाँ दी चलाय ॥ फि० ॥

सोना तो लंदन डाकू लेगये ।

अरी बीबी कागज़ दिये हमारे हाथ ॥ फि० ॥

पवन और पानी देते मोलको ।

अरी बीबी सांभर पे लायरी महसूल ॥ फि० ॥

मक्खन तो मक्खन बीबी खागये ।

अरी बीबी छाछ बिकादयी मोल ॥ फि० ॥

सबही विदेशी चीज़ें होगयी ।

अरी बीबी देशी तो खरी है मिटाय ॥ फि० ॥

गजल नं० २१

दूध पीने का कुछ फ़र्ज़ पालो. लाज माता की जाते बचालो ॥
तुम में प्रताप जैसी है ताकत, जान पर जान देने की आदत ॥
सीखो बच्चों को अपने सिखालो. लाज माता की जाते बचालो ॥
भीम अर्जुन के हो नाम लेवा. चहरे राम में नहीं आइ सेवा ॥
डूबी जाती है मुझको निकालो लाज माता की जाते बचालो ॥
शिवाजीको है तुम में हमैयत. इश्क कौमी वतन की है उल्फत ॥
सर फरोशी का जज़बा बढ़ालो. लाज माता की जाते बचालो ॥
वीर पुरुषो शुजाअत कहाँ है. द्रोपदी की हिमायत कहाँ है ॥
चीर खिचता है इसको बढालो. लाज माता की जाते बचालो ॥
सीता रावण में जब थी चुराई. बैठा लंका में देती दुहाई ॥
मुझको परदेशियों से छुड़ालो. लाज माता की [illegible] बचालो ॥
की [illegible] से राम लछमण. बोले लंका में थी दुष्ट रावण ॥
अपने [illegible] के [illegible] तुम [illegible] लाज [illegible] बचालो

स्त्री वोही हिन्दुस्तां की. लाज पंजाब में जिनकी उतारी ॥
आवो अब होश में हिन्द वालो. लाज माता की जाते बचालो ॥
नकशा तहजीब का ये खिंचा है. जुल्म अब औरतों पर रवां है।
परदा खुलवा के मुंहपर थुकालो. लाज माताकी जाते बचालो ॥
जलियांवाले को तुम यादरखना. उनके मकतल को आबादरखना
गोली आवे तो सीना अड़ालो. लाज माता की जाते बचालो ॥
नकश दिल पर मेरे टिकटिकी है. बेंत नंगे बदन पर पड़ा हैं।
नाक रगड़ो जमीं से मिलालो. लाज माता की जाते बचालो ॥
पूत मरने पर मां के रुदन का. रोंगटा हो खड़ा तन बदन का।
उसकी माता को धीरज बंधालो. लाज माता की जाते बचालो ॥
अब जो फिरते रजाकार बनकर. क्या२ आफत गुजरतीहै उनपर
अपने प्यारों को देखो दिखालो, लाज माता की जाते बचालो ॥
मरहबा कुफरी हैं सिलावत, डण्डे खाते हैं खामोश रहकर।
चाहे तन पर से चमड़ी उड़ालो लाज माता की जाते बचालो॥
सख्ती अजहद है इन मंजलों में, पर तसद्दुद न लाओ दिलों में।
बिजली अपने ही दिलपर गिरालो, लाज माताकी जाते बचालो॥
अपने सिरसे कफन बाँधलोअब, कहोउनसेके दिलखोलकर अब
जितना चाहे जी उतना रुलालो, लाज माता की जाते बचालो ॥
जुल्म हिम्मतसे सहते चलो तुम, आगेबढ़ के यह कहते चलोतुम
भेंट हमको चढ़ालो चढ़ालो लाज माता की जाते बचालो ॥
हैफ तुम से सपूत आज बनकर हिन्दू हों गुलाम उनकोबनकर
तौक गर्दन से फेरी निकालो लाज माता की जाते बचालो ॥
आवें गांधी तुम्हारी मदद को आगे बढ़ते हुए फिरभी आजका
शर्म आती है इसको डालदे, लाज माता की जाते बचालो ॥

गजल नं० २२

हुस्न की रौनक कभी थी अरगवानी चूड़ियाँ ।
आज लेकिन होगई जिल्लत की बानी चूड़ियां ॥
आर है मैदान में तुझको अगर आते हुए ।
मर्द बुजदिल पहन ले तु यह जनानी चूड़ियां ॥
मौत हो ऐसी कि खद्दर का दुपट्टा हो कफन ॥
खून से भरी हुई हों अरगवानी चूड़ियां ।
इंगलाशी चूड़ियां पहनो तुम इनको छोड़दो ॥
हैं पुरानी जेहनियत की ये पुरानी चूड़ियां ।
कौम को खातिर बढ़ो जो नाम लाफानी रहे ॥
कांच की किस काम की हाथों में फानी चूड़ियाँ ।
मर्द बन आओ अगर स्वराज की है आरजू ॥
हुकूमत रान कर नहीं सकतीं जनानी चूड़ियां ।
उर्मिला और पद्मनी ने जिनको पहना था कभी ॥
वीरता की पहनलो वो खानदानी चूड़ियां ।
खूने नाहक जब गिरे तो उसमें उनको रंगलो ॥
मुस्तफे आला को आकर हैं दिखानी चूड़ियां ।
आज मरदों को दिखादो अपने मुल्को काम को ॥
इस तरह करनी हैं देवी पासबानी चूड़ियां ।
वालंटियर लेडी कहें अब कांच की अच्छी नहीं ।
आहनी जेबा हैं इन हाथों में आनी चूड़ियां ॥

मिलने का पताः—

शंकरदास सावलदास दरीबा कलां देहली।